व्याकरण

संधि

जखन दू अथवा दू सँ अधिक वर्णकेँ मिललासँ विकार उत्पन्न होइत अछि अर्थात् वर्णक मेलसँ विकार उत्पन्न त अछि आ एकटा नव वर्ण बनैत अछि, तखन एकरा व्याकरणक भाषामे संधि कहल जाइत अछि। -नव+अन्न=नवान्न, जगत्+गुरु=जगद्गुरु, मन:+रथ=मनोरथ आदि।

यद्यपि मैथिलीमे संधिक उदाहरण नहिएक बराबरि भेटैत अछि मुदा मैथिलीमे तत्सम शब्दक बेस प्रयोग होइत छ आ तत्सम शब्दसभमे संधिक प्रमुखता अछि तेँ सन्धिक ज्ञान आवश्यक।

<u>संधिक भेद</u>-संधि तीन प्रकारक होइत अछि-01.स्वर संधि 02. व्यञ्जन संधि आ, 03.विसर्ग संधि।

<u>स्वर संधि</u>-जखन स्वर वर्णक संग स्वर वर्णक मेलसँ विकार उत्पन्न होइत अछि तखन ओकरा स्वर संधि ल जाइत अछि। जेना-विद्या+आलय=विद्यालय, गण+ईश=गणेश, एक+एक=एकैक, यदि+अपि=यद्यपि, अन=नयन।

स्वर संधि पाँच प्रकारक होइत अछि- (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण् संधि एवं) अयादि संधि।

<u>ह्रस्व+ह्रस्व</u>	<u>ह्रस्व+दीर्घ</u>	<u>दीर्घ+ह्रस्व</u>	<u>दीर्घ+दीर्घ</u>
धर्म+अर्थी=धर्मार्थी	देव+आलय=देवालय	विद्या+अध्ययन=विद्याध्ययन	विद्या+आलय=विद्यालय
गिरि+इन्द्र=गिरीन्द्र	मुनि+ईश=मुनीश	मही+इन्द्र=महीन्द्र	नदी+ईश=नदीश
भानु+उदय=भानूदय	लघु+ऊर्मि=लघूर्मि	वधू+उपस्थिति=वधूपस्थिति	वधू+ऊरू=वधूरू
पितृ+ऋण=पितृण			

(ख) <u>गुण संधि-एहि संधिमे</u> -अ' अथवा 'आ' क आगाँ -इ' अथवा 'ई' क रहला पर 'ए', 'उ' अथवा ऊ' क रहला पर 'ओ' आ 'ऋ' अथवा 'ॠ' क रहल पर 'अर्' भय जाइत अछि। जेना-

<u>अ/आ+इ/ई=ए</u>	<u>अ+आ+उ/ऊ=ओ</u>	<u>अ/आ+ऋ/ॠ=अर्</u>
गज+इन्द्र=गजेन्द्र	चन्द्र+उदय=चन्द्रोदय	सप्त+ऋषि=सप्तर्षि
महा+ईश=महेश	महा+ऊर्मि=महोर्मि	महा+ऋषि=महर्षि
सुर+इन्द्र=सुरेन्द्र	महा+उग्र=महोग्र	अधम+ऋण=अधमर्ण
देव+इच्छा=देवेच्छा	महा+उत्तम=महोत्तम	उत्तम+ऋण=उत्तमर्ण
परम+ईश्वर=परमेश्वर		
सर्व+ईश=सर्वेश		

(ग) वृद्धि संधि-एहि संधिमे 'अ' अथवा 'आ' क आगाँ 'ए' अथवा 'ऐ' क रहला पर 'ऐ' आ 'ओ' अथवा 'औ' क रहला पर 'औ' भय जाइत अछि। जेना-

अ/आ+ए/ऐ	अ/आ+ओ/औ
एक+एक-एकैक	जल+ओघ-जलौघ
सदा+एव-सदैव	वन+औषधि-वनौषधि
तथा+एव-तथैव	कुम्हड़+औड़ी-कुम्हड़ौड़ी
मत+ऐक्य-मतैक्य	मधुर+औषध-मधुरौषध
देव+ऐश्वर्य-देवैश्वर्य	बाल+औद्धत्य-बालौद्धत्य
सदा+ऐक्य-सदैक्य	विद्या+ओघ-विद्यौघ
महा+ऐश्वर्य-महैश्वर्य	महा+औषधि=महौषधि
	महा+औदार्य-महौदार्य

(घ) यण् सन्धि-यदि इ/ई, उ/ऊ/आ/ऋ/ॠ क आगाँ कोनो भिन्न स्वर आबय तँ इ/ई क 'य्', उ/ऊ क 'व' तथा ऋ/ॠ क 'र्' भय जाइत अछि। जेना-

इ/ई+भिन्न स्वर	उ/ऊ+भिन्न स्वर	ऋ/ॠ+भिन्न स्वर
प्रति+एक-प्रत्येक	अनु+अय-अन्वय	मातृ+आदेश=मात्रादेश
अभि+उदय-अभ्युदय	सु+आगत-स्वागत	मातृ+इका=मात्रिका
यदि+अपि=यद्यपि	अनु+इत-अन्वित	मातृ+ओज=मात्रोज
नदी+अम्बु=नद्यम्बु	मनु+अन्तर=मन्वन्तर	पितृ+औदार्य-पित्रौदार्य
देवी+आगमन=देव्यागमन	मधु+आलय=मध्वालय	भातृ+एव=भ्रात्रेव
नदी+आगम-नद्यागम	अनु+एषण-अन्वेषण	नेतृ+ऐक्य=नेत्रैक्य
	भू+आदि=भ्वादि	

(ङ) आयादि संधि-एहि संधिमे 'ए', 'ऐ' 'ओ', आ, 'औ' क आगाँ कोनो भिन्न स्वर रहय तँ 'ए' क 'अय्' 'ओ' क 'अव' तथा 'औ' क आव् भय जाइत अछि। जेना-

ए+भिन्न स्वर	ऐ+भिन्न स्वर	ओ+भिन्न स्वर	औ+भिन्न स्वर
चे+अन=चयन	नै+अक=नायक	भो+अन=भवन	पौ+अक=पावक
ने+अन-नयन	गै+अक=गायक	पो+अन=पवन	भौ+उक-भावुक
से+अन-सयन	दै+अक=दायक	पो+इत्र=पवित्र	द्यौ+एवे=द्यावेव

02. व्यञ्जन संधि-व्यञ्जन वर्णक संग स्वर अथवा व्यञ्जन वर्णक मेलसँ जँ विकार उत्पन्न हो तँ व्यञ्जन धि होइत अछि। जेना- दिक्+अम्बर=दिगम्बर, वाक्+मय=वाङ्मय, शम्+कर=शंकर, उत्+लेख=उल्लेख, +रूप=तद्रूप।

नियम-01. जँ वर्गक पहिल वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) क आगाँ कोनो वर्गक तेसर अथवा चारिम वर्ण (ग्, ज्, ड्, ब्, घ्, झ्, ढ्, ध्, भ्) अथवा कोनो स्वर वर्ण रहय तँ 'क्' क ग्,'च्' क 'ज्', 'ट्' क 'ड्', त् 'क' 'द्' 'आ' 'क 'ब्' भय जाइत अछि। जेना-

क्+भ्रान्त=दिग्भ्रान्त	अच्+अन्त=अजन्त	जगत्+आत्मा=जगदात्मा
क्+गज=दिग्गज	षट्+दर्शन=षड्दर्शन	कृत्+अन्त=कृदन्त
त्+औषधि=महदौषधि	जगत्+बन्धु=जगद्बन्धु	अप्+ज=अब्ज

नियम 02. जँ वर्गक पहिल वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) क आगाँ न् अथवा म् आबय तँ क्रमशः 'क्' क 'ङ' ' क 'ञ्', 'ट्' क 'ण्', 'त्' क न् आ 'प्' 'क' 'म्' भय जाइत अछि। जेना-दिक्+नाग=दिङ्नाग, त्+मय=चिन्मय, षट्+मार्ग=षण्मार्ग, षट्+मास=षण्मास, उत्+नति=उन्नति, जगत्+नाथ=जगन्नाथ, अप्+मय=अम्मय।

नियम 03. 'म्' क आगाँ यदि कोनो व्यञ्जन वर्ण रहय तँ 'म्' क (ं) अनुस्वार भय जाइछ, आ जँ ओ ञ्जन जँ कोनो वर्गक रहय तँ ओ अपन वर्गक पंचम वर्ण सेहो भय जाइत अछि। जेना-सम्+गम=संगम/सङ्गम, म्+यम=संयम/किम्+चित्=किंचित्/किञ्चित्, अहम्+कार=अहंकार/अहङ्कार शम्+कर=शंकर/शङ्कर।

नियम 04. 'त्' क आगाँ यदि 'च्' अथवा 'छ्' आबय तँ 'त्' क 'च्', ज् अथवा 'झ्' आबय तँ 'त्' क 'ज्', ड्' अथवा 'ठ्' आबय तँ 'त्' क 'ट्', 'ड्' अथवा 'ढ्' आबय तँ 'त' 'ड्', 'ल्' आबय तँ क क 'त्' 'ल्', 'श्' ाबय तँ 'त्' क 'च्' आ 'श्' क स्थानमे 'छ्' तथा 'ह्' आबय तँ 'ह्' क 'ध' भय जाइत अछि। ना-सत्+चित्=सच्चित्, उत्+चारण=उच्चारण, महत्+छिद्र=महच्छिद्र, उत्+ज्वल=उज्वल, उत्+झट्=उज्झट, त्+ठक्कुर=सट्टक्कुर, तत्+टिका=तट्टिका, उत+छिन्न=उच्छिन्न, उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट, महत्+शिला=महच्छिला, त्+श्वास=उच्छ्वास, उत्+श्रृंखल=उच्छृंखल, उत्+हार=उद्धार, तत्+हित=तद्धित।

नियम 05. 'त्' क आगाँ यदि कोनो स्वर वर्ण अथवा ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र् अथवा व् रहय तँ 'त्' क द्' भय जाइत अछि। जेना-जगत्+आनन्द=जगदानन्द, उत्+गम=उद्गम, उत्+घाटन=उद्घाटन, उत्+दाम=उद्दाम, त्+भव=उद्भव, उत्+योग=उद्योग, तत्+रूप=तद्रूप, वृहत्+वर्णन=वृहद्वर्णन, सत्+वंश=सद्वंश।

नियम 06. 'ऋ', 'र' अथवा 'ष' क आगाँ यदि 'न' रहय आ एहि मध्य कोनो स्वर, कवर्ग, पवर्ग अथवा य', 'व' अथवा ह रहय तँ 'न' क 'ण' भय जाइत अछि। जेना-भूष्+अन=भूषण, परि+नाम=परिणाम, म+अयन=रामायण, परि+मान=परिमाण, प्र+माण=प्रमाण चान्द्र+अयन=चान्द्रायण।

नियम 07, यदि कोनो शब्दक अन्तमे 'अ' अथवा 'आ' कँ छोड़िकऽ कोनो स्वर वर्ण आ ओकरा आगाँ 'स' रहय तँ 'स' क 'ष' आ 'स्थ' रहय तँ 'ष्ठ' भय जाइत अछि। जेना-वि+सम=विषम, वि+साद=विषाद, युधि+स्थिर=युधिष्ठिर, सु+समा=सुषमा, अभि+सेक=अभिषेक, अभि+सिक्त=अभिषिक्त आदि।

03. विसर्ग संधि-विसर्ग (:) क संग स्वर अथवा व्यञ्जनक मेलसँ जँ विकार उत्पन्न होइत अदि तँ ओ भेल विसर्ग संधि। जेना-मन:+अनुकूल=मनोऽनुकूल, मन:+हर=मनोहर, पुर:+हित=पुरोहित, नि:+कारण=निष्कारण, नि:+रव=नीरव आदि।

नियम 01, विसर्ग (:) क आगाँ 'च्' अथवा 'छ्' क रहला पर (:) विसर्गक 'श्', 'ट्' अथवा 'ठ्' क रहला पर 'ष्' आ 'त्' अथवा 'थ्' क रहलापर 'स्' भय जाइत अछि। जेना-नि:+चय=निश्चय, नि:+छल=निश्छल, धनु:+टंकार=धनुष्टंकार, हरि:+ठक्कुर=हरिष्ठक्कुर, नि:+तार=निस्तार, दु:+स्थल=दुस्थल आदि।

नियम 02, विसर्ग (:) क पूर्व इकार अथवा उकार रहय आ आगाँ क्, ख्, प्, अथवा फ् रहय तँ विसर्गक 'ष्' भय जाइत अछि। जेना-नि:+कपट=निष्कपट, दु:+कर=दुष्कर, नि:+कारण=निष्कारण, आवि:+कार=आविष्कार, चतु:+कोण=चतुष्कोण, नि:+खलन=निष्खलन, नि:+पाप=निष्पाप, नि:+प्राण=निष्प्राण, नि:+फल=निष्फल।

नियम 03, विसर्ग (:)क पहिने कोनो ह्रस्व स्वर रहय आ आगाँ 'र्' रहय तँ विसर्गक लोप भय जाइत अछि आ पूर्वक ह्रस्व स्वर दीर्घ भय जाइत अछि। जेना-नि:+रोग=नीरोग, नि:+रस=नीरस, दु:+राज=दूराज, पुन:+रमण=पुनारमण।

नियम 04, यदि विसर्ग (:) क पूर्व 'अ' अथवा 'आ' क छोड़िकऽ कोनो आन स्वर रहय आ आगाँ कोनो स्वर अथवा वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम (ग, ज, ड, द, ब, घ, झ, ढ, ध,भ, ङ, ञ, ण, न, म) वर्ण (य, र, ल, व् अथवा ह् आबय तँ विसर्गक 'र्' भय जाइत अछि। जेना- नि:+अर्थक=निरर्थक, नि:+आपद=निरापद, नि:+आकार=निराकार, नि:+ईश्वर=निरीश्वर, नि:+उपाय=निरूपाय, नि:+गुण=निर्गुण, नि:+जल=निर्जल, नि:+झर=निर्झर, नि:+बल=निर्बल, नि:+मल=निर्मल, नि:+विकार=निर्विकार, दु:+बल=दुर्बल, दु:+जन=दुर्जन, दु:+गन्ध=दुर्गन्ध, बहि:+मुख=बहिर्मुख आदि।

नियम 05-यदि विसर्ग:क पूर्व 'अ' रहय आ आगाँ वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम वर्ण अथवा य, र, ल, व , ह आबय तँ पूर्वक 'अ', आ विसर्गक 'ओ' भय जाइत अछि। जेना-उर:+ज=उरोज, मन:+ज=मनोज, सर:+ज=सरोज, यश:+दा=यशोदा, पय:+धर=पयोधर, मन:+नयन=मनोयन, मन:+भाव=मनोभाव, तप:+मय=तपोमय, मन:+योग=मनोयोग, मन:+रथ=मनोरथ, यश:+लाभ=यशोलाभ, मन:+विकार=मनोविकार, मन:+वांछित=मनोवांछित, मन:+हर=मनोहर, पुर:+हित=पुरोहित आदि।

नियम-06, यदि विसर्गक पूर्व 'अ' रहय आ आगाँ 'अ' आबय तँ पहिल 'अ' आ विसर्गक 'ओ' भय जाइत छ आ आगाँक 'अ' क लोप भय जाइत अछि परन्तु ओकर लुप्त होयबाक चिह्न (ऽ) भय जाइत अछि। -स:+अहम्=सोऽहम्, नव:+अङ्कुर=नवोऽङ्कुर, मन:+अभिलाषा=मनोऽभिलाषा, मन:+अनुकूल=मनोऽनुकूल।

परन्तु आगाँ वला 'अ' क स्थान पर कोनो आन स्वर आओत तँ विसर्ग क लोप भय जाइत अछि। -अत:+एव=अतएव, यश:+इच्छा=यशइच्छा।

□□□

कारक

जे क्रियाक उत्पतिमे सहायक हो, ओ कारक कहबैत अछि। जेना–छात्र पुस्तक पढ़ैत अछि। एहि वाक्यमे 'पढ़ैत अछि' क्रियाक उत्पतिमे 'छात्र' आ 'पुस्तक' सहायक अछि। एहि दुनूक अभावमे 'पढ़ब' क्रिया नहि भऽ सकैत अछि। तेँ 'छात्र' आ 'पुस्तक' क ई रूप कारक कहबैत अछि।

कारकक आठ भेद होइत अछि–कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण आ सम्बोधन।

(i) कर्त्ताकारक–जे काज (क्रिया) केँ करैत अछि से कर्त्ता कहबैत अछि। जेना–'राजू' पढ़ैत अछि। वाक्यमे 'पढ़बाक' काज (पढ़बक्रिया) केँ 'राजू' करैत अछि। तेँ 'राजू' एहि वाक्यक कर्त्ता भेल। मैथिलीमे कर्त्ता कारकक कोनो चिह्न नहि होइत अछि।

(ii) कर्मकारक–क्रियाक फल जाहि शब्द पर पड़ैत अछि अर्थात् क्रिया कयलासँ जे शब्द प्रभावित हो ओ कर्मकारक होइत अछि। जेना–राम आम खाइत अछि। एहि वाक्यमे रामक 'खायब' क्रिया करबाक प्रभाव 'आम' पर पड़ैत अछि अर्थात् 'आमक' नोकसान होइत छै। तेँ 'आम' मे कर्मकारक भेल। एकर चेन्ह अछि–0, काँ, केँ आ के।

(iii) करण कारक–क्रियाक सम्पादनमे कर्त्ताक जे सहायक हो अर्थात् क्रिया सम्पादनक साधन हो ओ करणकारक होइत अछि। दोसर शब्दमे कर्त्ता जाहि साधनसँ क्रिया करय से करणकारक होइत अछि। जेना–शिक्षक चाँकसँ श्यामपट पर लिखैत छथि। एह वाक्यमे शिक्षक (कर्त्ता) क लिखबाक साधन छनि 'चाँक'। ओ चाँकसँ लिखैत छथि। तेँ चाँकमे करण कारक अछि। करणकारकक चेन्ह अछि–सँ।

(iv) सम्प्रदान कारक–जाहि हेतु क्रिया कयल जाइत अछि से सम्प्रदान कारक होइत अछि। जेना–सोहन मोहनक लेल मोदक आनलक अछि। एहि वाक्यमे 'सोहन' मोदक आनबाक क्रिया 'मोहनक' लेल करैत अछि। तेँ 'मोहन' सम्प्रदान कारक भेल। एकर चेन्ह अछि–केँ, लेल, हेतु आदि।

(v) अपादान कारक–जाहि शब्दसँ अलगाव अर्थात् अलग होयबाक बोध हो से अपादान कारक होइत अछि। जेना–गाछसँ पात खसैत अछि। एहि वाक्यमे 'गाछसँ' पात अलग भऽ रहल अछि। तेँ ई 'गाछ' भेल अपादान कारक। एकर चेन्ह अछि–सँ।

(vi) सम्बन्ध कारक–जाहि शब्दसँ कर्त्ता अथवा आन कोनो कारकक सम्बन्धक बोध हो से सम्बन्ध कारक होइत अछि। जेना–जनक मिथिलाक राजा छलाह। एहि वाक्यमे 'मिथिलासँ' जनकक सम्बन्धक बोध होइत अछि। तेँ मिथिला भेल सम्बन्ध कारक। एकर चेन्ह अछि–क आ केर।

(vii) अधिकरण कारक-जे शब्द क्रियाक आधार रहैत अछि ओ अधिकरण कारक होइत अछि। जेना-छात्र विद्यालयमे पढ़ैत अछि। एहि वाक्यमे 'पढ़ैत अछि' क्रियाक होयबाक आधार अछि-विद्यालय, तैं विद्यालय अधिकरण कारक भेल। एकर चेन्ह अछि-मे आ पर।

(viii) सम्बोधन कारक-जाहि शब्दकेँ क्रियाक सम्पादन हेतु सम्बोधित कयल जाइत अछि से सम्बोधन कारक होइत अछि। जेना- हे छात्र! अहाँ मोनसँ पढ़ू। एतय 'पढ़ब' क्रियाक सम्पादन हेतु 'छात्रकेँ' सम्बोधित कयल जाइत अछि। तैं 'छात्र' भेल सम्बोधन कारक। एकर चेन्ह अछि-हे, हो, अरे, रे, रौ, हओ, हरौ, रओ आदि।

क्रिया

जाहि शब्दसँ कोनो कार्य अथवा व्यापारक होयब अथवा करब आदिक बोध होइत अछि से क्रिया कहबैत अछि। जेना-राम पढ़ैछ, श्याम गीत सुनैछ, गीता गीत गबैछ, मोहन दौड़ैछ। एतय 'पढ़ैछ', 'सुनैछ', 'गबैछ', आ 'दौड़ैछ' शब्दसँ क्रमशः पढ़ैछसँ पढ़बाक, सुनैछसँ सुनबाक आ गबैछसँ गैबाक कार्यक बोध होइत अछि तेँ ई सभ क्रिया अछि।

क्रियाक मुख्य दू भेद अछि-सकर्मक आ अकर्मक।

01. सकर्मक क्रिया-जाहि क्रियाक फल कर्त्तापर नहि पड़ि आन कोनो संज्ञापर पड़य से सकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-बटुक पत्र लिखलनि। एहि वाक्यमे' लिखलनि' क्रियाक फल कर्त्ता बटुक पर नहि पड़ि 'पत्र' पर पड़ैत अछि तेँ ई सकर्मक क्रिया भेल।

02. अकर्मक क्रिया-जाहि क्रियाक फल कर्त्तापर पड़य से अकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-सोहन हँसैछ, राधा नचैछ, हर्ष अबैछ। एतय-'हँसैछ' 'नचैछ' आ 'अबैछ' क्रियाक फल क्रमशः कर्त्ता सोहन, राधा आ हर्ष पर पड़ैत अछि तेँ ई सभ भेल अकर्मक क्रिया।

क्रियाक विशेष भेद-क्रियाक सातटा विशेष भेद अछि :-

(i) विधि क्रिया-जाहि क्रियासँ 'आज्ञा' अथवा 'विनयक' बोध हो, से विधि क्रिया होइत अछि। जेना-बैसु, आयल जाउ, आउ।

(ii) कामनात्मक क्रिया-जाहि शब्दसँ कहनिहारक मनोकामना प्रकट हो, से कामनात्मक क्रिया होइत अछि। जेना-ओ शीघ्र स्वस्थ होथु, कुशल रहथि, दीर्घायु होउ।

(iii) प्रेरणार्थक क्रिया-जाहि क्रियासँ एक व्यक्ति दोसरकेँ कार्य करबाक हेतु प्रेरित करैत अछि से प्रेरणार्थक क्रिया होइत अछि। जेना-शिक्षक छात्रसँ पाठ पढ़बा रहल छथि। मालिक नौकरसँ पानि भरबा रहल छथि। एतय 'पढ़बा रहल छथि,' भरबा रहल छथि।' प्रेरणार्थक क्रिया अछि।

(iv) पूर्वकालिक क्रिया-जँ एक वाक्यमे दू क्रियाक बोध हो, तँ पहिल क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहबैत अछि। जेना-राजु खाकऽ पढ़ैत अछि। एतय राजु पहिने खयलक अछि तकर बाद पढ़ब आरंभ कयल अछि। तेँ एहि वाक्यमे पहिल क्रिया 'खायब' पूर्वकालिक क्रिया भेल।

(v) संयुक्त क्रिया-जँ दू अथवा दू सँ बेसी क्रिया मिलिकऽ वाक्यमे एकहि अर्थक बोध करबैत अछि तँ ओ संयुक्त क्रिया कहबैत अछि। जेना-ओतहि अहाँ पोथी पढ़ि लेब। ओ घर चलि गेलाह। एतय 'पढ़ि लेब' आ 'चलि गेल' संयुक्त क्रिया थीक।

(vi) सहायिका क्रिया-जे क्रियाक व्यापारमे आन क्रियाक सहायता करय से 'सहायिका क्रिया' होइत अछि। ना-पंडित जी कथा कहि रहल छथि। हम लेख लिखैत छी। एतय 'छथि' आ ''छी' क्रिया क्रमशः कहब आ लिखब' क्रियाक व्यापारमे सहायक अछि तैं ई सहायिका क्रिया भेल।

(vii) नामधातु-नाम अर्थात् संज्ञा अथवा विशेषणसँ 'आएब' अथवा 'एब' प्रत्यय लगाकऽ जे धातु (क्रियाक ल रूप) बनैत अछि से नामधातु होइत अछि। जेना-रामू पोथी हथिया लेलाह। गोनू गायकेँ एकहि ठाम खूटेसने अछि। एतय-'हथियाब' आ 'खूटेसने' छथि नाम धातु अछि।

प्रयोगक दृष्टिसँ क्रिया दू प्रकार होइत अछि-मुख्य क्रिया आ गौण क्रिया।

(क) मुख्य क्रिया-जे क्रिया व्यापारक बोध कराबय से मुख्य क्रिया होइत अछि। जेना-छात्रलोकनि अपन ठ पढ़ैत छलाहँ। एतय 'पढ़ैत' क्रिया पढ़ब रूप व्यापारक बोध करबैत अछि तैं ई मुख्य क्रिया भेल।

(ख) गौण क्रिया-जे क्रिया वाक्यक मुख्य क्रियाक व्यापारक अर्थकेँ स्पष्ट करयसे गौण क्रिया कहबैत अछि। एहि क्रियासँ मात्र भूत, भविष्य आ वर्तमानक बोध होइत अछि। जेना-श्याम गीत गाबि रहल अछि। मोहन रटैत ल्लाह। 'रहल छथि' आ 'छलाह' गौण क्रिया अछि।

काल

काल-क्रियाक सम्पादन (करबा) मे जे समय लगैत अछि, ओकरा 'काल' कहल जाइत छै। जेना-सुमन विद्यालय गेल; सौरभ पढ़ैत अछि; श्याम काल्हि आओत। एतय 'गेल', 'पढ़ैत अछि; आ 'आओत' क्रियासँ क्रमशः बीतल, वर्त्तमान आ आबयबला समयमे क्रियाक होएबाक सूचना भेटैत अछि। इएह समय थीक-काल। एतय तीनू क्रियाक सम्पादनक तीन समय अछि। ई तीन कालक बोधक अछि। सभ क्रिया इएह तीन कालमे होइत अछि।

<u>कालक भेद-कालक तीन भेद अछि-</u>भूत, वर्त्तमान आ भविष्य।

<u>01. भूतकाल-</u>जँ क्रिया सम्पादनक समय बीत गेल रहैत अछि तँ ओ क्रिया भूत कालक होइत अछि। जेना-मनोज पोथी पढ़लाह। एतय 'पढ़लाह' क्रियासँ बोध होइत अछि जे मनोजक पढ़बाक क्रिया समाप्त भऽ गेल छनि आ ओकर समय बीत गेल छै। तँ एतय 'पढ़ब' क्रिया भूत कालक भेल।

<u>भूतकालक चारि उपभेद अछि-</u>(i) सामान्यभूत (ii) अपूर्ण भूत (iii) पूर्णभूत (iv) तात्कालिक भूत

<u>(i) सामान्य भूतकाल-</u>श्याम गेलाह/मोहन पढ़लाह/हम खयलहुँ आदि।

<u>(ii) अपूर्ण भूतकाल-</u>राजू पढ़ैत छलाह। गजेन्द्र पानि पिबैत छलाह।

<u>(iii) पूर्ण भूत काल-</u>गोनू स्कूल गेल छल। सोनू चल गेल छल आदि।

<u>(iv) तात्कालिक भूतकाल-</u>पंडित जी पतड़ा बाँचि रहल छलाह। राम हँसैत छल। अहाँ गाम जाइत छलहुँ/हम सुतल छलहुँ/राम हँसैत छल आदि।

<u>02. वर्त्तमान काल-</u>जँ क्रिया सम्पादन (करबाक) क समय उपस्थित (वर्त्तमान) रहैत अछि तँ ओ भेल-वर्त्तमान काल। जेना-गीता गीत गाबैत अछि। हम विद्यालय जाइत छी। तों हँसैत छें आदि।

<u>वर्त्तमान कालक चारिटा उपभेद होइत अछि-</u>

<u>(i) सामान्य वर्त्तमानकाल-</u>हम पढ़ै छी। तों जाइत छह। ओ कहैत छथि। श्याम गीत सुनैत अछि। सीता हँसैत अछि आदि।

<u>(ii) अपूर्ण वर्त्तमानकाल-</u> हम पढ़ि रहल छी। ओ खा रहल छथि।

<u>(iii) पूर्ण वर्त्तमानकाल-</u> हम ई पोथी पढ़ि गेल छी। तों पानि पिबि लेने छह। रमेश आबि चुकल अछि। दिनेश चलि गेल अछि।

<u>(iv) तात्कालिक वर्त्तमान-</u>नरेश स्नान करैत अछि। महेश घरसँ चलैत अछि।

03. भविष्यत् काल-जँ क्रिया सम्पादनक समय अयनिहार समय हो, तँ क्रियाक समय भविष्यत् काल हबैत अछि। जेना-धनेश मेला जइताह। हम सब कथा सुनब। तौं पढ़बह आदि।

(i) सामान्य भविष्यत् काल- सीता सीनेमा देखतीह। हमसब गाम जायब। रीता पढ़त, अन्नु बाजार जायत।

(ii) अपूर्ण भविष्यत् काल-रमेश जाइत रहत। उमेश खाइत रहत। हर्ष सुनैत रहत। मधु गाबैत रहत।

(iii) पूर्ण भविष्यत् काल-मोनू खयने रहत। धर्मेन्द्र गाम चलि गेल रहत। रानी पोथी पढ़ि गेल रहत।

समास

दू वा दूसँ अधिक पदकेँ अपन-अपन विभक्तिकेँ छोड़िकऽ आपसमे मिलब अर्थात् एक पद बनि जायब समास थीक आ बनल शब्द समस्त पद कहबैत अछि। जेना-राजेन्द्र, गंगाजल, विद्यापति, त्रिवेणी, अनाथ, दहीचूड़ाचीनी, तुलसीचौड़ा, नीलोत्पल, पीताम्बर आदि।

समस्त पदकेँ अलग-अलग करब विग्रह कहबैत अछि। जेना-राजासभक इन्द्र, गंगाक जल, विद्याक पति, नहि नाथ, दही, चूड़ा आ चीनी, तुलसीक चौड़ा, नील उत्पल, पीत छनि अम्बर जनिक अर्थात् विष्णु आदि।

<u>समासक भेद</u>-समासक मुख्य भेद सात अछि-

1. अव्ययीभाव, 2. तत्पुरुष, 3. कर्मधारय, 4. द्विगु, 5. द्वन्द्व, 6. बहुव्रीहि आ 7. नञ्।

<u>01. अव्ययीभाव समास</u>-जाहि समस्तपदक पहिल पद अव्यय रहैत अछि आ ओकरे अर्थक प्रधानता रहैत अछि तँ ओ अव्ययीभाव समास होइत अछि। एहि समस्तपदक प्रयोग अव्यये सदृश होइत अछि। जेना- यथार्थ, अर्थक अनुसार, यथाशक्ति-शक्तिक अनुसार, दुर्भिक्ष-भिक्षाक अभाव, निर्विघ्न-निर्विघ्न अभाव, आसमुद्र-समुद्र पर्यन्त, अनुक्रम-क्रमक पश्चात्, अनुग्रह-ग्रहक पश्चात्, उपग्रह-ग्रहक समीप, उपमंत्री-मंत्रीक समीप, अनुरूप-रूपक योग्य, प्रतिदिन-दिन-दिन, बारंबार-बेर-बेर।

<u>02. तत्पुरुष समास</u>-जाहि समस्त पदक उत्तर पद (अन्तिमपद), प्रधान रहैत अछि ओ तत्पुरुष समास होइत अछि। जेना-पनिघट-पानिक घाट, पाठशाला-पाठक हेतु शाला, पॉकेटमार-पॉकेटकेँ मारऽबला, युधिष्ठिर-युद्धमे स्थिर आदि।

<u>तत्पुरुष समासक छः उपभेद होइत अछि</u>-(i) द्वितीया (ii) तृतीया (iii) चतुर्थी (iv) पञ्चमी (v) षष्ठी (vi) सप्तमी

(i) <u>द्वितीया (कर्म) तत्पुरुष-गोपाल</u>-गायकेँ पालनिहार, भिखमंगा-भिख माँगनिहार, आँखिफोरबा-आँखिकेँ फोरनिहार आदि।

(ii) तृतीया (करण) तत्पुरुष- कष्टसाध्य-कष्टसँ साध्य, मदमत्त-मदसँ मत्त (मातल), शोकाकुल-शोकसँ आकुल, बाणविद्ध-बाणसँ बिद्ध आदि।

(iii) चतुर्थी (सम्प्रदान) तत्पुरुष-तपोवन-तपक लेल बन, बटखर्चा-बाटक लेल खर्चा, हथकड़ी-हाथक लेल कड़ी, पैजेब-पैरक लेल जेबर।

(iv) पञ्चमी (अपादान) तत्पुरुष- ऋणमुक्त-ऋणसँ मुक्त, गुणहीन-गुणसँ हीन,धर्मच्युत-धर्मसँ च्युत, ातिभ्रष्ट-जातिसँ भ्रष्ट आदि।

(v) षष्ठी (सम्बन्ध) तत्पुरुष-बेलपत्र-बेलक पत्र (पात), मनोयोग-मनक योग, सुधासिन्धु-सुधाक सिन्धु, गराज-मृगक राजा आदि।

(vi) सप्तमी (अधिकरण) तत्पुरुष-घरघुस्सा-घरमे घुसय बला, घरपैसा-घरमे पैसयबला, नवीर-दानकरयमे वीर, कर्मवीर-कर्म करयमे वीर आदि।

03. कर्मधारय समास- जाहि समस्त पदक पहिल विशेषण आ उत्तरपद विशेष्य (उपमा उपमेय) हो ओ र्मधारय समास होइत अछि। जेना-कमलनयन-कमल सदृश नयन, नीलकमल-नीला कमल, मुखकमल-कमलक मान मुख, व्याघ्र पुरूष-व्याघ्र सदृश पुरुष, चरणकमल-चरणरूपी कमल आदि।

04. द्विगु समास-जाहि समस्तपदक पहिल पद संख्यावाचक रहैत अछि ओ द्विगु समास होइत अछि। ना-त्रिलोकी-तीन लोकक समूह, त्रिभुवन-तीन भुवनक समूह, पंचवटी-पाँच बाटक समूह, चतुर्भुज-चारि भुजाक मूह, षट्कोण-षट् (छः) कोणक समूह, त्रिनेत्र-तीन नेत्रक समूह।

05. द्वन्द्व समास-जाहि समस्त पदक दुनू पद प्रधान होइत अछि ओ द्वन्द्व समास होइत अछि। ना-दालिभात-दालि आ भात, पोथीपतड़ा-पोथी आ पतड़ा, लोटाडोरी-लोटा आ डोरी, हाथीघोड़ा-हाथी आ घोड़ा, ीताराम-सीता आ राम, पाणिपाद-पाणि आ पाद आदि।

06. बहुव्रीहि समास-जाहि समस्तपदक कोनो खण्डक अर्थक प्रधानता नहि भऽ अन्य (तेसर) अर्थक धानता हो से बहुव्रीहि समास होइत अछि। जेना-हथटुट्टा-हाथ टूटल हो जकर से, एकमुहा-एक मुह छै जाहि घरक , कनकट्टा-कान कटल छै जकर से, लम्बोदर-लम्बा छनि उदर जनिकर ओ (गणेश), पञ्चानन-पाँच आनन छनि निका ओ (शिव जी), दशमुख-दशमुख छनि जिनका से (रावण), षडानन्न-षट् आनन छनि जिनका ओ कार्तिकेय) आदि।

07. नञ् समास-जाहि समस्तपदक पहिल पद नकारात्मक रहैत अछि, ओ नञ् समास होइत अछि। ना-अनेक न-एक, अद्वितीय-न द्वितीय, अजुबा- न जुबा, अनचिन्हार-नहि चिन्हार, अनहोनी-नहि होनी, अयोग्य-न ोग्य, अदृश्य-न दृश्य, अनजान-नहि जानल आदि।

□□□

मुहावरा

मुहावरा ओ वाक्यांश अछि जे अपन सामान्य अर्थकेँ छोड़ि कोनहु विशेष अर्थक बोध करबैत अछि। एकरा वाग्धारा सेहो कहल जाइत अछि। जेना-पानि-पानि होयब, पाला पड़ब आदि।

एकर प्रयोगसँ भाषा रोचक, ललित, प्रौढ़ आ परिमार्जित होइत अछि। मुहावरा असंख्य अछि। व्यवहारमे अपनिहार मुख्य मुहावरा आगाँ देल जा रहल अछि।

1. **अगिया बेताल** (साहसी)-काज करबामे गणेश अगिया बेताल अछि।
2. **अटकलबाजी** (अन्दाज)-परीक्षामे अटकलबाजीसँ काज नहि चलै छै।
3. **अड्डा जमायब** (जमा होयब)-चोर पायाक काते कात अड्डा जमा लेलक।
4. **अपन सन मुह होयब** (लज्जायब)-परीक्षामे असफल भेलापर छात्रकेँ अपनासन मुह भऽ गेलनि।
5. **आकाश पताल एक करब** (कठिन परिश्रम करब)-परीक्षामे सफलताक लेल रामू आकाश पताल एक कऽ देलक।
6. **अन्हेर नगरी** (न्याय शून्य स्थान)-ई गाम अन्हेर नगरी भऽ गेल अछि।
7. **औंठा देखायब** (धोका पर धोखा देब)-सुमनसँ बचिकऽ रहु ओ औंठा देखायब खूब जनैत अछि।
8. **आंगुर उठायब** (बदनाम करब)- आइ राजनेता पर केओ आंगुर उठा दैत अछि।
9. **करेज फाटब** (ईर्ष्या होयब)-श्याम मोटर की किनलक ओकरा पड़ोसी सभक करेजा फाटऽ लगलै।
10. **पाँचो आंगुर घीमे होयब** (लाभमे रहब)-एखन ठीकेदार सभक पाँचो आंगुर घीमे अछि।
11. **करेजा पर साँप लोटब** (दोसरक उन्नति देखि कऽ जरब)- रामक राज्याभिषेकक खबरि सुनि मंथराक करेजापर साँप लोटऽ लगलै।
12. **करेजापर पाथर राखब** (दिल मजगूत करब)-विभीषणक विमुखता पर रावण अपना करेजापर पाथर राखि लेलनि।
13. **कान काटब** (मात करब)-कर्पूरी ठाकुर आँकड़ा प्रस्तुत करबामे सभक कान काटैत छलाह।

14. **कान फूकब** (बहकायब)–मंथरा कैकेयीकेँ कान फुकि देने छलीह।

15. **गरा लगायब** (प्रेम करब)–हम सभ जाति-पाति बिसरिकऽ सभकेँ गरा लगबि एहीमे सभक भल' अछि।

16. **चेहरा पर हवाइ उड़ब** (घबरायब)–पुलिसकेँ देखि चोरक चेहरा पर हवाइ उड़ि गेलै।

17. **जान पर खेलब** (वीरताक परिचय देब)–कारगिल युद्धमे भारतीय जवान जान पर खेलकऽ भारतक लाज बचौलक।

18. **लोहा लेब** (मुकाबला करब)– कर्णसँ केओ लोहा लेबऽ नहि चाहैत छलै।

19. **आँखिमे पानि नहि रहब** (लाज नहि होयब)–कृतघ्नक आँखिमे पानि नहि रहैत छै।

20. **कान ऐंठब** (गलत नहि करबाक प्रतीज्ञा करब)–आब हम कान ऐंठैत छी जे कहियो एहन काज फेर करी।

21. **दाँत निपोरब** (गिड़गिड़ायब)–राजू दाँत निपोरऽ लागल तऽ दस टाका दऽ देलियै।

22. **अपनहि पयरमे कुरहड़ि मारब** (अपन अपकार करब) राम बाप पर मुकदमका कऽ अपनहि पयरमे कुरहड़ि मारलक।

23. **अरण्य रोदन करब** (व्यर्थ कानब) आइ-काल्हि प्राय: अधिकारीक आगाँ अपन फरियाद करब अरण्य रोदन सिद्ध होइत अछि।

24. **अस्सी मोन पानि पड़ब** (हतोत्साहित होयब) परीक्षाक नाम सुनितहि गोनू पर अस्सी मोन पानि पड़ि जाइत छै।

25. **अंत पायब** (थाह पायब) ईश्वरक अंत पायब सर्वथा असंभव अछि।

26. **आँचर पसारब** (भीख माँगब) प्राय: सभ माय अपन पुत्रक कल्याण हेतु भगवतीक आगाँ आँचर पसारैत अछि।

27. **आगि होयब** (क्रुद्ध होयब) विदुरक नीतिपूर्ण वचन सुनि दुर्योधन आगि भऽ जाइत छल।

28. **आगिमे घी ढारब** (क्रोध बढ़ायब) राम परशुरामक सम्वादमे लक्ष्मणक व्यंगपूर्ण बात आगिमे घी ढारि दैत छल।

29. **आन्हरक ठेङा** (असहायक सहायक) आइ-काल्हि विरले आन्हरक ठेङा होइत छथि नहि तऽ प्राय: सभ सबलेक बल प्रदान करैत छथि।

30. **आकाश टूटब** (अकस्मात् विपत्ति आयब) पिताक मृत्युक समाचार सुनितहि अजय पर आकाश टूटि पड़लै।

31. **उठान हारब** (निर्बल होयब) एहि बूढ़ बड़दक कोन आशा, ई तऽ अपनहि उठान हारि देलक अछि।

32. **उड़ल चिड़ैक चिन्हब** (दोसरक मनक बात बुझब) भोनू! ठकह नहि, हम उड़ल चिड़ैक चिन्हैत छी।

33. **उन्टे गंगा बहायब** (विपरीत काज करब) व्यक्तिकेँ बिनु सुधारनहि समाजकेँ सुधारब उन्टे गंगा बहायब थीक।

34. **कलम तोड़िकऽ लिखब** (खूब नीक लिखब) गुञ्जन एहि परीक्षामे तऽ कलम तोड़िकऽ लिखलक।

35. **किताबी कीड़ा बनब** (हरदम पढ़ैत रहब) किताबी कीड़ा बनलासँ बुद्धिक विकास नहि होइत अछि।

36. **कुम्हर बतिया** (अशक्त) राहुल कुम्हरबतिया नहि अछि जे सोनुक धमकीसँ डरि जायत।

37. **कोड़ो गनब** (व्यर्थ समय बितायब) रमेशक परीक्षा समाप्त भऽ गेलैक अछि, कोनो काज-धन्धा तऽ छै नहि कोड़ो गनि रहल अछि।

38. **कोल्हुक बड़द** (सदिखन काज करनिहार) धर्मी कोल्हुक बड़द छथि एको क्षण विश्राम नहि।

39. **कौड़ीक तीन होयब** (तुच्छ होयब) आइ-काल्हि गरीबक नीको वचन कौड़ीक तीन भऽ जाइत अछि।

40. **खाक छानब** (भटकब) नौकरीक वास्ते दीनलाल कतय-कतयक खाक नहि छानलनि मुदा एखनहु सफलता नहि भेटलनि अछि।

41. **गाराँक धेघ होयब** (भार होयब) जँ पुत कपुत भऽ जाय तँ ओ बापक लेल गाराँक धेघे भऽ जाइत छै।

42. **गोटी लाल करब** (काज सुतारब) गोविन्द बाबू अपन गोटी लाल कऽ कऽ निश्चिंत भऽ गेलाह।

46. गोबर गणेश (मंदबुद्धि) गोनू महागोबर गणेश अछि।

44. चर्खी औंटब (व्यर्थ बाजब) चानो दाइ भरि दिन चर्खी औंटैत रहैत छथि।

45. चानीक जूता (घूसक राशि) जँ अनुचित लाभ उठयबाक हो तँ अधिकारीकेँ चानीक जूतासँ पूजा करू।

46. चारूनाल चीत करब (पराजित होयब) सोनु मोनुकेँ चारू नाल चित कऽ देलक।

47. चुल्हाक भाँड़मे जायब (नष्ट होयब) छविनाथक धन चुल्हाक भाँड़मे जानि ओहिसँ हमरा की?

48. टाँग अड़ायब (बाधा देब) मूलचन कोनो सामाजिक काजमे अनेरहुँ टाँग अड़ा दैत छथि।

49. टाँग मोड़ब (विश्राम करब) संजय! कनि टाँग मोड़ि लेह आ घर चलि जइहेँ।

50. ढोल पीटब (प्रचार करब) आइ काल्हि सभै पार्टी बला अपन-अपन प्रशंसा में ढोल पीटि रहल अछि।

51. दुतियाक चान (बहुत दिनपर दर्शन देब) कमलाकान्त आइकाल्हि दुतियाक चान भऽ गेलछथि।

लोकोक्ति

लोकक उक्ति (कहब) कें लोकोक्ति कहल जाइत अछि। लोक माने आम (सर्वसाधारण) लोक। आमलोकक जे उक्ति कालक विभिन्न खण्डक विभिन्न परिस्थितिमे अपन अर्थक सार्थकता सिद्ध करैत लोकक द्वारा अपन वाक्‌व्यवहारमे प्रस्तुत होइत आबि रहल अछि से उक्ति भेल-'लोकोक्ति'। लोकोक्तिक अर्थक सार्थकताक ई चमत्कार अछि जे ई युग-युगसँ मात्र लोकेवाणीमे प्रयुक्त नहि होइत अछि, अपितु एकर प्रयोग साहित्योमे अर्थ गाम्भीर्य, भाषाक सौंदर्य आ विशेष अर्थक द्योतन हेतु होइत आबि रहल अछि। एकर एकहु शब्दकें बदलल अथवा एमहरसँ ओमहर नहि कयल जा सकैत अछि। एकर संख्या असंख्य अछि। प्रतिदिन लोक जीवनमे प्रयुक्त किछु मुख्य लोकोक्तिकें नीचाँ देल जा रहल अछि।

1. **अकुलिनि बिआही, कुलक उपहास।** (सामर्थ्यक प्रतिकूल हीन काज करब) राम अहिल्याक लग जाय हुनक उद्धारक अकुलिनि बिआही, कुलक उपहासक काज कयलनि।

2. **अधायल बगुलाक पोठी तीत** (पेट भरला पर रसगुल्ला तीत) धनिकक लेल अनुदान भेटब अधायल बगुलाक पोठी तीत होइत अछि।

3. **अनेर गायक राम रखबार** (जकर केओ नहि रक्षक तकर राम रक्षक) कुम्हारक आबामे बिलाड़ीक बच्चाक जीवित बचब अनेर गायक राम रखबार भेल।

4. **अपन बेदन ताहि निवेदिए जे पर बेदन जान** (अपन दुःख ओकरे कहब जे दोसरक दुःख बुझय) भगिरथ महाकंजूस मनोहरक आगाँ सहयोगक याचना कयलनि। हुनका ई बुझले नहि छलनि जे अपन वेदन ताहि निवेदिए जे पर वेदन जान।

5. **अन्हरामे कन्हा राजा** (मूर्खक मध्य कमो ज्ञानीकें अपनाकें महाज्ञानी बूझब) अपना गाममे रामायणक दू-चारि पाँति रटि श्यामू अन्हरामे कन्हा राजा बनि लेल अछि।

6. **अन्हेर नगरी चौपट राजा टके सेर खाजा टके सेर भाजी** (मूर्ख समाजमे नीक बेजाय एक समान) मूर्ख आ पंडितक संग एके व्यवहार होइत देखि ई कहबी मोन पड़ल-अन्हेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

7. **अपन करनी पार उतरनी** (अपन कर्मक बलें सफल वा असफल होयब) भरि साल कहियो रंजन पढ़लनि नहि परीक्षामे बैसि गेला फेल भेलाह तँ मोन पड़लनि अपने करनी पर पार उतरनी।

8. **अपन दही केओ कहै खट्टा** (अपना चीजकेँ केओ अधलाह नहि कहैछ) रामूक शर्ट नीक नहि छलै तैयो ओहि शर्टक बड़ाइ छटने छल, ई सुनि श्याम बाजल हँ हौ अपन दही केओ कहै खट्टा।

9. **अपन खुट्टापर कुकुरो बली** (अपना घरमे दुर्बलो व्यक्ति बलवान रहैत अछि) दस गोटे रघबाकेँ मारबाक हेतु ओकरा घर पहुँचला मुदा ओ तेहन ने रूप धयलक जे सभ पड़ेलाह, तखन हुनका सभके बुझेलनि जे अपन खुट्टा पर कुकुरो बली होइछ।

10. **अपने नीक तऽ आनो नीक** (नीक व्यक्तिक लेल सभ नीक) उपकारी संजूक लेल केओ अपकारी नहि। ठीके कहबी छै- अपने नीक तऽ आनो नीक।

11. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठु** (आत्म श्लाघा) अधिकांश लोक अपने मुँह मियाँ मिट्ठु होइत छथि।

12. **अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप** (मूल धनक नाश होइत देखैत रहब मुदा निस्सार वस्तुक लेल अनघोल करब) रमेशक धन रमना तरे-तर शून्य कऽ देलक मुदा ओहिपर ककरो ध्यान नहि पड़लनि लेकिन हुनकर मुट्ठी भरि पोआर लैत देखि बुधनाकेँ ओकरा सभमिलि हाथ-पैर तोड़ि देलकै एहिपर मन पड़ल ठीक कहबी छै अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप।

13. **आलसी लेखेँ गंगा बड़ी दूर** (काम नहि कयनिहारक बहाना बनायब) रजुआ कहलकै भजुआकेँ कनी कलसँ ठंडा पानि ला तँ भजुआ बाजल-हम बड़ थाकल छी रमुआकेँ कह आनि देतऽ) एहिपर रजुआ कहलक-ठीके कहै छै-आलसी लेखे गंगा बड़ी दूर।

14. **आइमाईकेँ ठोप नहि बिलाड़िकेँ भरि माँग** (आदरक पात्रकेँ आदर नहि जनसामान्यकेँ परमादर) झाजीक ओतय उपनयनमे अभ्यागत लोकनिक कोनो पुछ नहि आ गामक लगुआ-भगुआ सभकेँ पुछि-पुछिकऽ खोआओल जाइत देखि बिसुन बाजल आइमाइकेँ ठोप नहि बिलाड़िकेँ भरि माँग।

15. **आयल पानि गेल पानि बाटहि बिलायल पानि** (गुड़क नफा चुटिए खाय) कमल कलकत्तामे कमयलनि कम नहि मुदा संयोगलनि नहि मेंटेनेन्समे सभ गमा देलनि। गाम अयलापर पिताजी पुछलथिन कतेक टका कमाकऽ आनलह अछि तँ ओ बाजलनि कहाँ किछु? खर्चे बड़ छलै एहि उत्तर पर हुनक पिता कहलखिन-हँ, हौ! ई कहब कोनो फुसि छै-आयलपानि गेल पानि बाटहि बिलायल पानि।

16. **आगू नाथ न पाछू पगहा** (आगाँ-पाछाँ क्यो ने होएब)-बापक मरलाक बाद रामू एकदम एसकर भऽ गेल, आगू नाथ न पाछू पगहा।

17. **आधा तीतर आधा बटेर** (मिलल-जुलल)-राम कका ओतुक्का भोजमे माछ-मांसु दुनू रहैक। आधा तीतर आधा बटेर।

18. **आब पछतओने होएत की, जखन चिड़ै चुनलक खेत** (नुकसान भऽ गेलाक बाद सचेत हएब) नेना तँ मरि गेल, आब पछताओने होएत की, जखन चिड़ै चुनलक खेत।

19. **आम खयबासँ काज, की आँठी गनलासँ** (काजसँ मतलब राखब)-अनेरे विवाद करै जाइ छी, आम खयबासँ काज अछि, की आँठी गनलासँ।

20. **आसा भंग दुख, मरन समान** (आशाक भंगक दुख मृत्यु समान होइत छैक)-रमनकेँ डॉक्टर साहेब भरोस देने छलथिन, से पूर नहि भेलैक। आशा भंग दुख, मरन समान।

21. **ई गुड़ खयने, कान छेदैने** (विपरीतो स्थितिमे अवश्य करणीय काज)सांसारिक लोककेँ शादी विवाहक मामलामे ई गुड़ खयने कान छेदौनहिक पड़ि होइ छै।

22. **बिखेँ नाङरि कटाबी तऽ छौ मास व्यथे मरी** (तामसमे किछु अनुचित कऽ बैसब जकर कष्टसँ पीड़ित रहब) मोहन भाइक विवादमे अपन नीक गाय बेचि बिखेँ नाङरि कटाबी तऽ छौ मास व्यथे मरीक पड़िमे पड़लाह।

23. **उखरिमे मुड़ी देल तऽ मुसरक कोन डर** (भरिगर काजमे होमयबला हरानीसँ नहि घबरायब)-कन्यादानमे बड़ खर्चामे पड़ि गेलहुँ, मुदा उखरिमे मुड़ी देल तऽ मुसरक कोन डर।

24. **उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटे** (गलती कऽ कऽ सीना जोड़ी करब)-पाकिस्तान बेर-बेर उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटबाक काज भारत संग करैत अछि।

25. **ऊँटक मुँहमे जीराक फोरन** (थोड़ मात्रामे)-कमलनाथ बाबूक श्राद्धमे माछ-मांसु ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन छल।

26. **एक तऽ चोरी, ऊपरसँ सीना जोरी** (बलधिंगरो करब)-कन्यागत ओतेक देलक तैयो तंग करिते छिऐक, एक तऽ चोरी, ऊपरसँ सीना जोरी।

27. **एक विदेशी दोसर तोतराह** (दुरूह काजक लेले अकुशल काज कयनिहारक भेटब)-रामू कम्प्यूटर ठीक करबाक लेल एक विदेशी दोसर तोतराहक सदृश अछि।

28. **एक म्यानमे दू तरुआरि** (एकठाम दू दबंग लोकक हएब)–सासु-पुतोहु दुनूकेँ एकठाम रहब एक म्यानमे दू तरुआरि सदृश अछि।

29. **एक हाथे थपड़ी नहि बजैछ** (एसकर कोनो काज नहि होइछ)–गाममे सभकेँ मिला कऽ राखू, एक हाथे थपड़ी नहि बजैत छैक।

30. **एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ** (चिड़ैसँ चिड़ैक बच्चे उड़ौत)–हुमायूँक लेल अकबर एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ सिद्ध भेल।

31. **ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह** (एक-दोसरक गपकेँ परस्पर बुझबामे असमर्थ होयब)–गाममे अंग्रेजिया बाबूकेँ ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह बुझाइत छलनि।

32. **कतए राजा भोज कतए भोजुआ तेली** (कोनो तुलने नहि)–राम आ श्याममे राजा भोज आ भोजुआ तेली बला संबंध छलैक।

33. **कानी गायक भिन्ने बथान** (समूहसँ भिन्न विचारक लोक)–सभ दलीक मध्य कैकेयीक विचार कानी गायक भिन्ने बथान सदृश छल।

34. **कारी अक्षर भैंस बराबरि** (निरक्षर)–स्कूल गेलासँ की हएत, अहाँ तँ कारी अक्षर भैंस बराबर छी।

35. **कानऽ क मोन तऽ, आँखिमे गरल खूट्टी** (बहाना करब)–काज करबाक अछि तँ करू, अनेरे कानऽक मोन भेल तँ आँखिमे गरल खुट्टी बला बात नहि करू।

36. **कुकुरकेँ कतौ घी पचल** (नीक चीज नीक नहि लागब)–आजुक विपक्षी दलकेँ सरकारक नीको काज कुकुरक घी पचल सदृश होइत अछि।

37. **बिलाड़िक भागे सीक टूटल** (एकाएक अप्रत्याशित लाभ होयब)–मिथिलामे बाढ़ि अयला पर राहत वितरणमे अधिकारी सभक लेल बिलाड़िक भागे सीक टूटब होइत अछि।

38. **काँच बाँसक मुंगरी** (वास्तविकताक अभाव)–भारतक समक्ष पाकिस्तान काँच बाँसक मुंगरी अछि मुदा ओ बेर-बेर भारतकेँ घुड़की दैत अछि।

39. **खगजाने खगहिक भाषा** (दू लोकक बीचक गप बूझब तेसरक लेल असम्भव होयब)–भारत आ रूसक मध्यक व्यवहार खगजानहि खगहिक भाषा समान होइत अछि।

40. **खुट्टा बलें पड़रू चुकरए** (शक्ति सम्पन्नक बलें अपनाकें शक्तिशाली बूझब)-गाम घरक छोट भैया नेता सभक व्यवहार खुट्टा बलें पड़रू चुकरए होइत अछि।

41. **खसने नहि लजाइ, हँसने लजाइ** (गलतीसँ नहि आलोचनासँ डरब)-व्यापारमे घाटा लगला पर सियाराम मौन भय गेलाह ओहि पर हुनक मित्रगण कहलनि-साहस कय फेर व्यापारमे लागह किएक तँ ई सत्य जे खसने नहि हँसने लजाइ।

42. **खेत चरय गदहा मारल जाय जोलहा** (दोष ककरो आ दण्डित हो केओ)- चोरि कयलक खखना आ बान्हल गेल मखना। एकरे कहै छै-खेत खाय गदहा, मारल जाय जोलहा।

43. **गाय गोआर मिलान तँ ठेहुन पानि दुहान** (दू लोकक मेलसँ तेसरकें ठकल जायब)- रमाकान्त आ उमाकान्तमे तेहन ने मेल अछि जे हुनका दुनूक रहस्यक पार पायब सर्वथा असम्भव, मुदा धनु हुनका दुनूक फेरमे उल्लू बनि गेलाह। ओ ई नहि बुझैत छलाह जे गाय गोआर मिलान तँ ठेहुन पानि दुहान।

44. **गाय नहि तँ बड़द दूही** (असम्भव कार्य) रमणजीकें बसबाड़ि नहि छनि मुदा हुनका सँ मंच निर्माण हेतु पाँचटा बाँस माँगल गेलनि तऽ ओ बजलाह- हम बाँस कतय सँ देब? गाय नहि अछि तँ बड़दकें दूही।

45. **गुरू गुड़ चेला चिन्नी** (गुणमे बड़सँ छोटक बढ़ब)-शम्भू स्वयं बड शठ मुदा हुनक पुत्र तँ हुनको जितने छनि। ठीके कहल गेलैक अछि-गुरू गुड़ चेला चिन्नी।

46. **घर दही तँ बाहरो दही** (अपन लोकक बीच सम्मान तँ बाहरो सम्मान होइछ)-विद्यापतिकें मिथिलेमे नहि देश-विदेशे मे प्रतिष्ठा छनि एकरे कहै छै-घर दही तँ बाहरो दही।

47. **घरक भेदिया लंका डाह** (आपसी फूट बेस हानीकार होइछ) आपसी झगड़ाक कारण जयचन्द्र मुहम्मद गौरीकें बजौलनि जाहिसँ अपने तऽ गेबे कयलाह हिन्दू राज्यो नष्ट भऽ गेल। एकरे कहै छै-घरक भेदिया लंका डाह।

48. **चटमंगनी पट बिआह** (अतिशीघ्र काज होयब) जनकजी एकहि दिनमे खढ़, बाँस, आ मजदूरक जोगार कय घर ठाढ़ कऽ लेलनि। एहरे कहै छै चट मंगनी, पट बिआह।

49. **चलनी दूसय सूपकेँ जिनका सहस्र गोट छेद** (दोषी रहितहुँ अनका दुसब) रजनीश स्वयं सब अवगुणक आगर छथि मुदा दूसैत छथि दिनेशकेँ। ठीके कहल गेल अछि-चलनी दूसय सूपकेँ जिनका सहस्र गोट छेद।

50. **छुछुन्दरि माथमे चमेलीक तेल** (अयोग्य लोककेँ नीक वस्तुक लाभ) कहुना अपन जीवन बीतौनिहार कर्मूकेँ एकदिन मोटर साइकिल पर सजि-धजिकऽ बहराइत देखि गोविन्द बाजल-छुछुन्दरिक माथमे चमेलीक तेल चरितार्थ भऽ गेल।

51. **जकर लाठी तकर भैंस** (शक्तिक चलें अनर्थ करब) धनञ्जय लाठीक बलपर झिंगुरक सामनहि ओकर खेत जोति लेलकनि। एहिपर संजय बाजल ठीके कहै छै जकर लाठी तकर भैंस।

□□□

संक्षेपण

कोनो देल गेल अवतरणक भावकेँ बिनु नष्ट कयने ओकरा एक तिहाइ शब्दमे व्यक्त करब संक्षेपण थिक। मूल अवतरणक सार, क्रमबद्धता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, शुद्धता आ सरलता संक्षेपणक प्रमुख गुण अछि। संक्षेपण देल गेल अवतरणक भावसँ सम्बद्ध एकटा शीर्षक देब आवश्यक अछि।

उदाहरण स्वरूप

उदाहरण-1 (अवतरण)

आइ सर्वत्र उदासी व्याप्त अछि। चरित्रमे ह्रास भेल जा रहल अछि। मुदा जँ हमसभ मिलिकऽ एहि दिशामे तन-मनसँ लागि जाइ तँ चरित्र रूपी गाड़ीक हम स्वयं कुशल चालक बनि सकैत छी आओर चरित्र रूपी गाड़ीकेँ लुढ़कबासँ बचाकऽ सही दिशामे अग्रसर कऽ सकैत छी, मुदा एकरा लेल पहिने चरित्रवान बनऽ पड़त आ मौन व्रतधारी जकाँ एहि दिशामे बढ़ऽ पड़त। दीप सदृश तिल- तिल जरि कऽ अपन प्राणक आहुति देबऽ पड़त।

प्रारूप

चरित्रक महत्त्व

मनुक्ख अपन चरित्रक निर्माता स्वयं होइछ। चरित्र-भ्रष्ट व्यक्ति चतुर्दिक ह्रासक कारण बनैछ। तेँ तन-मन लगाकऽ सभकेँ चरित्रवान बनबाक चाही तखनही चहुँमुखी विकास संभव थिक।

अवतरण -2

परमेश्वरक व्याख्या अनन्त अछि। हुनक विभूतियो अनन्त अछि। हुनक आश्चर्यचकित करऽवला विभूति किछु कालक लेल हमरा वशीभूत कऽ लैत अछि मुदा हम पूजारी तऽ सत्यरूपी परमेश्वरक छी। वएह एक मात्र सत्य थिक आओर सभ मिथ्या।

प्रारूप

सत्यहि परमेश्वर थिकाह

परमेश्वर सत्यक पर्याय थिक जकरा छोड़िकऽ सम्पूर्ण जगत मिथ्या थिक।

अवतरण-3

हम स्वर्गक बात किएक करी? वृक्षारोपण कऽ कऽ हम एतहि स्वर्ग किएक ने बनाबी? महान सम्राट् अशोक कहने छथि जे-"रस्ता पर हम बट वृक्ष रोपि देलहुँ अछि, जाहिसँ जीव मात्रकेँ छाहरि भेटत। आमक गाछक समूह सेहो लगा देलहुँ अछि।

आइ प्रभुत्व सम्पन्न भारत एहि महाराजर्षिक राज चिन्ह लऽ लेलक अछि। 23 सौ वर्ष पूर्व ओ देशमे जेहन एकता स्थापित कयलनि, ओहिना हम प्राप्त कयलहुँ अछि, की हमरा लोकनि ओहि सन्देशकेँ सुनि नहि सकैत छी, एहि सन्देशकेँ सुनिकऽ निश्चित रूपसँ एहन प्रबन्ध कऽ सकब जाहिसँ भारतक सभ प्रजाजन कहि सकताह जे हमरा लोकनि जाहि रस्ता पर वृक्ष लगाओल, ओ जीव मात्रकेँ छाहरि दैत अछि।

प्रारूप

सम्राट अशोक जीव मात्रक हितमे रस्ता पर वृक्ष लगाकऽ भूमिकेँ स्वर्ग बनाओल, ओ देशमे एकता स्थापित कयलनि। वर्त्तमान सरकारो ओहि सन्देशक आधार पर देशमे एकता स्थापित कयलनि आ वृक्षारोपण कयलनि।

अवतरण-4

हमरा बजारक भोजन खएबामे एकदम नीक नहि लागल।

प्रारूप

भोजन स्वादहीन छल।

अभ्यास हेतु अवतरण

नीचाँ देल गेल अवतरणक उचित शीर्षक दए संक्षेपण करू।

अवतरण-1

माइक भाषा थीक मातृभाषा। एहि भाषाक बोली नेना जन्महिसँ माइक मुहसँ सुनबाक सौभाग्य प्राप्त करैत अछि। एहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक। हम सभ मिथिलावासी छी तेँ हमर मातृभाषा मैथिली थीक। एकर महत्त्व छैक। तेँ ओ कहिओ नहि बिसरल जा सकैत अछि। कारण देशक यथार्थ परिचय पएबाक हेतु एवं ओकर भूत, वर्त्तमान आ भविष्यक स्वरूप ज्ञात ओहि देशक लोक द्वारा ओहि भाषामे लिखल ओहि देशक साहित्यक अध्ययनसँ होइत छैक। साहित्यमे मानुषिक प्रवृत्ति केर विचारधारा निहित रहैत छैक। ई एक दर्पण थिक जाहिमे मनुष्य वर्त्तमान की अतीतक दर्शन सेहो कय सकैत अछि। हमर मातृभाषा मैथिलीक साहित्य छओ सए वर्ष पुरान अछि। एकर सबल साहित्य छैक। एकर शब्द भण्डार बड़ समृद्ध छैक। ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति, गोविन्द दास, चन्दा झा आदि कविक कृति मैथिली भाषाक सुरक्षाक स्तम्भ अछि। एकर साहित्य काव्य, नाटक, गद्य आदि विधामे कोनो देशी भाषासँ न्यून नहि अछि। एकर बजनिहार तीन करोड़ व्यक्ति छथि।

अवतरण-2

परोपकारक भावना मात्र मनुष्येटामे नहि अछि। एकर पवित्र भाव प्रकृति पर सबसँ बेसी स्पष्ट अछि। वृक्ष अपन पत्र, पुष्प, फल ओ डारि सभ किछु अनके हेतु त्याग करैत अछि। जल सभ जीव-जन्तुक प्राणरक्षक भए जीवन कहबैछ। पशु भारवहन कए परोपकार करैछ। सूर्य दिन-राति चलैत रहैत छथि। चन्द्रमा संसार भरिक व्यथाकेँ दूर करबाक हेतु, आरामक हेतु समय पर उपस्थित भय पीयूष वर्षा कय सभकेँ हरित-भरित बनौने रहैत छथि। मेघ जलराशिकेँ धारण कय सभकेँ आनन्दित करैछ, नदी जलक भण्डारकेँ सुरक्षित राखि जीव-जन्तुक पालन-पोषणमे सहायक होइछ, पर्वत कन्द, मूल, फल, जड़ी-बूटी आदि सामानक उपहार उपस्थित कए परोपकारिताकेँ प्रकट करैत अछि। अतएव, प्रकृतिक सभ साधनमे परोपकारक भावना सन्निहित अछि।

अवतरण-3

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि। यर्थाथत: सामाजिक जीव मनुष्यक हृदयक घात-प्रतिघातक, आशा-आकांक्षाक जेहन मार्मिक चित्रण तत्कालीन साहित्यमे उपलब्ध होइछ; तेहन अन्यत्र नहि। कहल गेल अछि इतिहासकेँ छोड़ि सभ वस्तु फूसि रहैछ। अँगरेजीमे एकटा उक्ति अछि जकर सारांश ई अछि जे धीया-पूता जहिना आइ खेलाइत अछि तहिना मिल्टनोक समयमे खेलाइत छल। परिस्थिति परिपार्श्वक भेदें मनुष्यक व्यवहारमे अन्तर पड़ैछ; किन्तु ओकर नैसर्गिक स्वभावमे कोनो अन्तर नहि आओत।

अवतरण-4

राज जनताक थिक, जनता लेल थिक, तेँ शासन ई ध्यान रखलक जे जनताकेँ सरकारी काजक सिलसिलामे भाषाक स्तर पर कोनो असुविधा नहि होइक। एहह कारण थिक जे एक प्रदेशमे एकसँ अधिको राजभाषाक प्रावधान कयल गेलैक। फलत:, कोनो प्रदेशमे जतेक भाषाकेँ माध्यम बनाओल जाइछ सभ ओहि प्रदेशक राजभाषा कहबैछ। एकरा प्रथम, दोसर, तेसर आदि श्रेणीमे करब कोनो अर्थ नहि रखैछ। हिन्दीकेँ सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु राष्ट्रभाषा मानल गेलैक। जहि प्रदेशमे मुख्यत: एक भाषा-भाषी अछि ताहिठाम तेँ कोनो समस्या नहि छैक। किन्तु, बिहार सन प्रदेशमे अनेक भाषा-भाषीक बहुलता अछि तेँ राजकाज चलएबाक माध्यम भाषा लेल विवाद उठैत अछि।

अवतरण-5

हे! गेल जाइ। हाथ पयर थर-थर कँपैत रहैत छल। ओढ़ना तरसँ कोनो काज करक हेतु हाथ बाहर नहि होइत छल। साँझ-प्रात घूरक संग बैसल-बैसल ओ रातिक' पोआर तरमे नुकाय कोनहुना दिन खेपल। मोट गद्दी पर उत्तम सीरक-तुराइ ओढ़ने पड़ल-पड़ल केहन आलसी भय गेल छलहुँ। दिन उठला पर जाड़क लेल एक डूब स्नानो करब कठिन लगैत छल। तुराइ तरसँ बाहर भए अँगरखा खोलि रातिक भोजन करब दुस्साहस बुझना जाइत छल। भोरमे पढ़बाक हेतु ओछाओन छोड़ब असम्भव भय गेल छल। भरोसे नहि छल जे ई गरीबक हाथकेँ कपौनिहार, अमीरकेँ अकर्मण्य बनौनिहार, नेना-भुटकाक स्वछन्द क्रीड़ामे बाधा देनिहार जाड़ कहियो जायत।

□□□

पत्र-लेखन

मित्रक पिताक मृत्यु पर मित्रकेँ शोक-पत्र लिखू।

धनेशमपुर

05.05.2013

प्रिय मोहन,

नमस्कार!

कुशल कुशलापेक्षी। काल्हि अहाँक पत्र पाबि उत्सुकतासँ पढ़य लगलहुँ मुदा अहाँक पिताक वानक मृत्युक समाचार पढ़ि गुम भऽ गेलहुँ। एहेन दुखद शोक-समाचार सुनि घरभरिक लोककेँ अपार शोक भेलनि ा कयल की जाय! ईश्वरक लीलाक पार के पाओत? ई शरीर अनित्य अछि, कखन की भऽ जायत केओ नहि कहि कैत अछि। हुनक मृत्यु एक महान् व्रजाघात थिक। परञ्च मृत्युसँ बचओनिहार केओ नहि। जन्म आ मृत्यु दुनू अभिन्न ी थिक।

अहाँक पिता सरलता, सज्जनता, शिष्टता आ व्यवहारपटुताक साक्षात् मूर्त्ति छलाह। हुनक मधुर वाणी, अपनापनक व आदर-सत्कार स्मरण होइत देरी' आँखि नोरा जाइत अछि एवं कंठ अवरुद्ध भऽ उठैत अछि। एक महापुरुषक धन पर हम अहाँक संग संवेदना प्रगट करैत छी। हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी जे ओ अहाँकेँ एहि दुःखकेँ सहबाक क्ति दऽ सान्त्वना प्रदान करथि आ ओहि दिवंगत आत्माकेँ शाश्वत शांति भेटनि।

आशा आ विश्वास अछि जे अहाँ भैयारीमे श्रेष्ठ हयबाक कारणेँ अपन कर्त्तव्यसँ हुनक मर्यादा आ प्रतिष्ठाक रक्षा रब। इति।

ा :- मोहन झा

ग्राम-लालगंज

पो.-सरिसव-पाही

जिला-मधुबनी

अहाँक मित्र

सुनील

□□□

मित्र द्वारा लिखल गेल पत्रक उत्तर लिखू।

मोहनपुर

14.05.2013

प्रिय मोहन,

नमस्कार!

हम कुशल छी आ अहाँक कुशल ता भगवानसँ मनबैत छी। अहाँक पत्र पाबि परम प्रसन्न भेलहुँ। हाँक उलहन अत्यधिक आनन्द आ अपार दुःखक कारण भऽ गेल अछि। आनन्द एहि हेतु भेल अछि जे अहाँ हमर

कुशल जानबाक लेल उत्सुक रहैत छी। मुदा दुःख एहि लेल भेल अछि जे हमरा स्तब्धता अहाँक कोमल हृदयकेँ ठेस पहुँचओलक अछि। हमरा आशा एवं विश्वास अछि जे कारण बूझि अहाँ हमरा अवश्ये क्षमा करब।

मित्र! परीक्षोपरांत गाम अबितहिँ हम परीक्षोपरांत अस्वस्थ भऽ गेलहुँ। बाइसी भऽ गेल। बेसी काल बेहोश रहैत छलहुँ। बचबाक आशा नहीं छल। अहाँ केँ सूचना देबाक लेल श्रीमान् भाइजी केँ कहलियनि। ओ पत्र पठाय देबाक सूचना देलनि परञ्च पठओलनि नहि। हुनका पूर्ण विश्वास छलनि जे अहाँ हमर अस्वस्थताक सूचना पाबि परीक्षा छोड़ि दौगि पड़ब। आब हम पथ्य खयलहुँ। आशा करैत छी जे शीघ्र स्वस्थ भऽ जायब। औषधि चलि रहल अछि। आब जानक कोनो डर नहि। परिवारक सब गोटा कुशल छथि। अहाँ केँ देखय लेल सभहक मन लागल छनि। अतः परीक्षा समाप्त भेला पर अहाँ वापस एतय आयब। एकहि दिन रहलाक उपरांत गाम चलि जायब। हमरा आशा अछि जे आब अहाँ हमरा प्रति मनमे आन भावना नहि राखब। अयबाक निश्चित समय लिखि पठायब जै सँ मखना बस-स्टैण्ड पर उपस्थित रहत। अवश्ये आयब। इति।

पता :- अजीत झा

ग्राम-कनकपुर

पो.-लोहना रोड

जिला-दरभंगा

अहाँक मित्र

सुमन

□□□

3. दर्शनीय स्थलक विषयमे छोट भायकेँ पत्र लिखू।

खजांची रोड

पटना

10.05.2013

प्रिय राज,

शुभाशिष!

आइ हम आगरासँ घुरलहुँ। एहि बेर हम अपन विद्यालयक शिक्षक एवं छात्रगणक संग पूजावकाशमे घूमय बहरा गेल छलहुँ। आगरामे अनेक ऐतिहासिक महत्त्वक स्थान अछि; जेना-किला, ताजमहल इत्यादि। ताजमहलक तँ गप्पे नहि हुअय! ई श्रीकृष्णक कमनीय क्रीड़ा सभहिक साक्षी यमुनाक तट पर ठाढ़ अछि। एकरा मुगल शहंशाह शाहजहाँ अपन बेगम मुमताजक स्मृतिकेँ चिरस्थायी बनेबाक लेल बनओने छल। एल्डुअस हक्सले एकर रूप-रंगक आ अनुपात-भंगक आलोचना कयने छथि, से हम कहियो पढ़ने रही। साहिर लुधियानवीक ओ नज्म सेहो हम पढ़ने छी जाहिमे ताजक विषयमे ओ लिखने छथि-'इक शाहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर, हम गरीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मजाक।' मुदा, एकरा सद्यः देखिकेँ उक्त सबटा कथन तर्कहीन लागल।

ताजक विषयमे की कहू? संसारमे सातटा आश्चर्यक गप्प के कहय, जँ दुइओ तीन आश्चर्य होइत तँ ओहूमे ई मे शामिल कयल जाय सकैत छल। ताज! कालक गालपर टघरल अश्रुक'दू बुन्न! नहि, ई तँ संगमरमर पर अंकित तन नारीक प्रति सनातन पुरुषक प्रेम-कविता थिक। इजोरिया रातिमे ई आओरो आकर्षक बुझि पड़ैत अछि, जेना ताज स्वयं शाहजहाँसँ भेट करक लेल सजि-धजिकेँ बहराय गेल होअय।

एहि पत्रमे आर की लिखू? भेट भेला पर आओरो गप्प कहब। माकेँ प्रणाम कहि देबनि। पिताजी मुम्बइक -प्रदर्शनी देखिकेँ कहिया धरि घुरताह?

:- श्री राज ठाकुर तोहर अग्रज
ग्राम-लोहना पश्चिम अशोक
पो.-सरिसव पाही
जिला-मधुबनी

□□□

खेलकूदक महत्त्वक विषयमे छोट भायकेँ पत्र लिखू।

नारायणी कन्या पाठशाला,
पटना सिटी
20.05.2013

प्रिय मुन्ना,

शुभाशीष!

आइ हमरा बाबूजीक एक पत्र प्राप्त भेल। एहिमे ओ तोहर दिनानुदिन खसैत स्वास्थ्य पर चिन्ता त कयलनि अछि। हुनक चिट्ठीसँ एहन बुझि पड़ैत अछि जे तौँ एखन 'किताबी कीड़ा' बनि गेल छैँ। हम स्वयं अनुभव करैत छी जे जीवनमे प्रगतिक स्वर्णिम शिखरपर आरूढ़ हेबाक लेल परिश्रम परमावश्यक -अध्ययनमे रत होएब आवश्यक छैक, किन्तु एकर तात्पर्य ई कदापि नहि जे ई सभ स्वास्थ्यक बलि दऽ कऽ करी। स्थ्यकेर आहुति दऽ नीक परीक्षाफल पायब कोनो बुधिआरी नहि भेल।

तौँ त'जनिते छैँ जे स्वस्थ शरीरमे स्वस्थ मस्तिष्कक वास होइत छैक। स्वामी विवेकानन्द 'अपने नौजवान मित्रों के ' जे पोथी लिखने छथि, ओकरा तौँ अवश्य पढ़िहेँ। ओहिमे ओ लिखने छथि जे जँ तौँ फुटबॉल नहि खेलाइत छैँ, तँ क मर्मकेँ सेहो नीक जकाँ नहि बुझि सकैत छैँ।

तौँ जँ तौँ अध्ययन द्वारा वैज्ञानिक आ वैयक्तिक उन्नति, राष्ट्रक सेवा आ समाजक उत्थान चाहैत छैँ, तँ सर्वप्रथम न स्वास्थ्यपर ध्यान दहीँ। उत्तम स्वास्थ्य लेल शारीरिक श्रम अनिवार्य अछि आ एहि लेल तोरा कोनो-ने-कोनो खेल लेबाक चाहियौ।

हम आशा करैत छी जे तौँ हमर कहनाइ मानि अपन आ हमरा लोकनिक हित करबेँ।

:- मुन्ना चौधरी तोहर दीदी
द्वारा-प्राचार्य सुनीता
पटना कॉलेजिएट स्कूल
दरियापुर, पटना

□□□

5. पिताक मृत्युपर सहपाठीकेँ पत्र लिखू।

विश्वामित्र निवास

तारकेश्वर पथ

पटना

19.05.2013

प्रिय मुकेश,

नमस्कार!

अहाँक पूज्य पिताजीक असामयिक देहान्तक समाचार पाबि हमरा एते मर्मान्तक दुख भेल जे कहि नहि सकैत छी। एखन त' अहाँ सभहिक उपर संकटक पहाड़ टूटि पड़ल अछि। परञ्च, मृत्युपर ककर अधिकार छैक? अहाँ तँ जनिते छी, 'हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।'

एहि हृदय-विदारक क्षणमे हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी जे ओ दिवंगत आत्माकेँ परमशान्ति दथु आ अहाँ लोकनिकेँ कष्ट सहबाक शक्ति प्रदान करथि। धैर्य, धर्म आ संगीक परिचय तँ विपत्तियेमे होइत छै। जँ एखन अहाँक काज आबि सकी, त' अपनाकेँ धन्य बूझब।

पता :- मुकेश कुमार

मिर्जापुर,

दरभंगा

अहाँक शुभेच्छु

राधेश्याम

□□□

6. सिगरेट पीबासँ मनाही लेल छोट भायकेँ पत्र लिखू।

स्नातकोत्तर छात्रावास

कोठली न.-8

भागलपुर

प्रिय राजेन्द्र,

शुभाशीष!

आइ गामसँ मोहनक पत्र आयल अछि। ओ गाम आ अपन परिवारक शुभ समाचार लिखलक-से जानि बड़ प्रसन्नता भेल। ओ एकटा बात एहन लिखलक जाहिसँ हमरा बड़ बेसी दुख भेल। ओ लिखने अछि जे

ल-फिलहालमे तँ सिगरेट पिबऽ लगलेहँ। सिगरेट पीलासँ कतेक हानि छै, तँ नहि जनैत छँ। प्राय: धनीक लोककेँ गरेट पिबैत देखि तँ कहि सकैत छँ ई पैघलक चिन्ह थिक। मुदा तँ एहन कखनो नहि बूझ। सिगरेटक सेवनसँ फड़ामे धुआँक तह जमि जाइत छैक, जाहिसँ भयंकर हृदय-रोग भऽ जाइत अछि। सिगरेट पिउलासँ मुहसँ दुर्गन्ध बैत अछि। इत्र बेचनिहार कतहु जाइत अछि तँ सुगन्धि पसारैत अछि। दोसर दिस सिगरेट पीनिहार कतहु जाइए तँ र्गन्ध परसैत अछि। सिगरेटसँ स्वास्थ्य चौपट होइत अछि। जाहि टाकासँ तँ नीक-नीक पोथी कीनि सकैत छँ, वास्थ्यवर्द्धक फल खाय सकैत छँ, बढ़िया वस्त्र धारण कऽ सकैत छँ आ अपन निर्धन संगीक मदति कऽ सकैत छँ, ोहि टाका-पैसाकेँ सिगरेटमे जराय देब कतेक अधलाह गप्प थिक, तँ बुझबाक चेष्टा कऽर।

हम आशा करैत छी जे हमर पत्र पढ़लाक बाद तँ कखनो सिगरेटकेँ अपन ठोरसँ नहि लगेबौ। हम तोहर तरक प्रतीक्षा बड़ व्यग्रतासँ कऽ रहल छी।

ता :- राजेन्द्र कुमार

वर्ग-नवम

उच्च विद्यालय, अंबा

भागलपुर

तोहर बड़का भाय

महेश

□□□